ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—20/02/2021 **सुदामा चरित**

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

<u>सुदामा चरित</u>

'सुदाम चरित' कृष्ण और सुदामा पर आधारित एक बहुत ही सुंदर रचना है। इसके कवि नरोत्तम दास जी हैं, नरोत्तम दास जी ने इस रचना को दोहे के रूप में प्रस्तुत किया है ।

'सुदामा चरित' के पदों में नरोत्तम दास जी ने श्री कृष्ण और सुदामा के मिलन, सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन किया है। सुदामा जी बहुत दिनों के बाद द्वारिका आए। कृष्ण से मिलने के लिए कारण था, उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्ती भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के बाद दो दोस्तों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और कृष्ण की उदारता का वर्णन भी किया गया है। किस तरह से उन्होंने मित्रता धर्म निभाते हुए सुदामा के लिए उदारता दिखाई, वह सब किया जो एक मित्र को करना चाहिए। साथ ही में उन्होंने श्री कृष्ण और सुदामा की नोक-झोंक का बड़ा ही कौशल से वर्णन किया है। इसमें यह भी दर्शाया गया है कि श्री कृष्ण कैसे अपने मित्र- धर्म का पालन बिना सुदामा के कहे हुए अपने मन की बात
~~~~~~~~~~

जानकर कर देते हैं। मित्र का यह सबसे प्रथम कर्म रहता है कि वह अपनी मित्र के बिना कहे उसके मन की बात और उसकी अवस्था को जान ले और उसके लिए कुछ करें और उदारता दिखाते हुए वह उसकी महानता है।

सुदामा चरित काव्यांश का भावार्थ व सारांश

सुदामा की पत्नी जानती थी कि द्वारिकाधीश श्री कृष्ण सुदामा के बहुत अच्छे मित्र हैं। इसीलिए सुदामा की पत्नी ने अपनी गरीबी से छुटकारा पाने के लिए सुदामा को जिदकर भगवान श्री कृष्ण के पास सहायता मांगने भेजा । हालाँकि सुदामा श्री कृष्ण से मदद लेना नहीं चाहते थे।

सुदामा मीलों पैदल चल कर द्वारिका नगरी पहुंचते हैं। लेकिन उनकी दयनीय स्थिति देखकर द्वारपाल उन्हें महल के दरवाजे पर ही रोक देता है। लेकिन सुदामा के यह बताने पर कि उनका नाम सुदामा है और वो कृष्णा से मिलना चाहते हैं।

तब द्वारपाल महल के अंदर जाकर कृष्ण को सुदामा के बारे में बताता हैं। श्री कृष्ण दौड़े -दौड़े चले आते हैं और अपने परम मित्र को महल के अंदर ले जाकर उनका खूब आदर सत्कार करते हैं।श्री कृष्ण सुदामा के पैरों में चुभे हुए कांटों को निकालने वक्त इतने भावुक हो जाते हैं कि वो सुदामा के पैरों को अपने आंसुओं से धो देते हैं। आदर सत्कार करने के बाद कृष्ण सुदामा से उसके बगल में छुपायी हुई पोटली के बारे में पूछते हैं। और मुस्कुराते हुए सुदामा से कहते हैं कि बचपन में भी जब गुरु माता ने उन्हें चने खाने को दिए थे तो वो सारे चने अकेले ही खा गए थे। और आज भी भाभी (सुदामा की पत्नी) ने उनके लिए जो उपहार भेजा हैं। वह भी उन्हें नहीं दे रहे हैं

खूब आदर सत्कार करने के बाद कृष्ण सुदामा को खाली हाथ विदा कर देते हैं। इससे नाराज सुदामा घर लौटते समय कृष्ण के बारे में अनगलत बातें सोचने लगते हैं। वो सोचते हैं कि बचपन में घर- घर जाकर माखन माँग कर खाने वाला मुझे क्या देगा।

लेकिन जब वो अपने गांव पहुंचते हैं तो उन्हें झोपड़ी की जगह आलीशान व भव्य महल दिखाई देता है और महल के द्वार पर सारी सुख सुविधाएं नजर

आती है। सच्चाई का एहसास होने वो दयासागर , करणानिधान भगवान श्री कृष्ण के प्रति नतमस्तक होकर उनकी महिमा गाने लगते हैं।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”